CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

झालावाड़ जिले के शासकीय बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रोद्योगिकी – एक अध्ययन

मीनाक्षी वर्मा
शोधार्थी
डॉ. सीमा परवीन खान
पर्यवेक्षक
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)
Email: vermameenakshi15692@gmail.com, Mobile-8740979546

First draft received: 14.05.2024, Reviewed: 19.05.2024, Final proof received: 18.06.2024, Accepted: 25.06.2024

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में झालावाड़ जिले के शासकीय बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रोद्योगिकी – एक अध्ययन पर शोध कार्य किया है। वर्तमान समय में देश की बैंकिंग प्रणाली देश की अर्थव्यवस्था और देश के आर्थिक विकास का मूल आधार हैं। देश के वित्तीय क्षेत्र का 70 प्रतिशत से अधिक धनराशि के लेन–देन के लिये वित्तीय क्षेत्र को प्रमुख आधार माना जाता हैं। वर्तमान में बैंको के माध्यम से अपने सभी ग्राहकों को इन्टरनेट बैंकिंग, मोबाईल बैंकिंग व अन्य सेवाओं के माध्यम से मोबाईल के द्वारा घर बैठे सेवाएँ व उनके खातों के सम्बन्ध में जानकारियाँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। तकनीक के माध्यम से बैंक अपने ग्राहकों को अनेक सुविधाएँ ही नही दे रहे, अपितु वे अपनी परिचालन क्षमता का भी विस्तार कर रहे हैं। सूचना प्रोद्योगिकी आज की आवश्यकता हैं जिसके बिना बैंकिंग व्यवहार अधूरे हैं।

मुख्य शब्द : *बैंकिंग प्रणाली, इन्टरनेट बैंकिंग, मोबाईल बैंकिंग परिचालन क्षमता, सूचना प्रोद्योगिकी आदि.*

प्रस्तावना

भाषा मानव जीवन का अभिन्न अंग हैं। भाषा के द्वारा ही कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को अपने भाव अभिव्यक्त करता है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक कारणों से अलग–अलग मानव समूहों का आपस में सम्पर्क हो जाता है । पिछले कुछ समय में सूचना और सम्पर्क के क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ हैं। बुद्धि एवम् भाषा के मिलाप से सूचना प्रोद्योगिकी के सहारे आर्थिक सम्पन्नता की ओर भारत लगातार अग्रसर होता जा रहा हैं। भारत में सूचना प्रोद्योगिकी का तेजी से विकास हो रहा हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रयोगो का अनुसंधान करके विकास की गति को बढ़ाया जा रहा हैं। बैंक किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा होती है। अर्थव्यवस्था में सन्तुलन और विकास के लिए बैंकों की कार्यप्रणाली सुव्यवस्थित होनी आवश्यक है। विशेष रूप से उदारीकरण और वैश्वीकरण के सन्दर्भ में यह और भी आवश्यक है। बैंकिंग परिदृश्य बहुत तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। सम्पूर्ण विश्व में लगभग सभी देशों में बैंक बदलते वातावरण के अनुसार अपनी कार्य प्रणाली, अपने स्वरूप एवं अपने उत्पादों को परिवर्तित करने के लिए अग्रसर है। भारत में बैंकों ने अपने स्वरूप को वाणिज्य बैंक के साथ–साथ विकास बैंक के रूप में भी विकसित करने का प्रयास किया है ताकि बैंक देश के न केवल आर्थिक विकास में अपितु सामाजिक कल्याण एवं विकास में भी अपना सहयोग कर सकें। बैंकों के राष्ट्रीयकरण ने एवं नवीन आर्थिक–सामाजिक चुनौतियों ने विकास बैंकिंग की अवधारणा को जन्म दिया है।

इलेक्ट्रोनिक्स तथा डिजिटल उपकरणों की सहायता से झालावाड़ जिले के शासकीय बैंकिंग क्षेत्र में निरन्तर प्रयोग हो रहे हैं। आज के युग में ई–कॉमर्स, ई–शॉपिंग, ई–गवर्नस, ई–बैंकिंग, ई–मेडीसिन आदि इलेक्ट्रोनिक माध्यमों का विकास हो रहा हैं। वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र में ई–बैंकिंग के माध्यम से ही बैंकों के सभी कार्य सम्पूर्ण हो रहे हैं। सूचना प्रोद्योगिकी का झालावाड़ जिले के शासकीय बैंकिंग क्षेत्र में अति–महत्वपूर्ण स्थान हैं।

सूचना प्रोद्योगिकी का अर्थ

आधुनिक प्रौद्योगिकी के संदर्भ में सूचना तकनीकी और सूचना एवं संप्रेषण प्रोद्योगिकी का प्रयोग समानार्थी के रूप में किया जाता है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी (आई.सी.टी.) वृहद् पद है जो सूचना तकनीकी और संप्रेषण तकनीकी को सम्मिलित करता है। इसमें रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, टेलीकान्फ्रेंसिंग, आदि को रखते हैं। इन तकनीकियों को दो वर्गों में रखते हैं– उपग्रह (सैटेलाइट) आधारित संचार, भू–आधारित संचार। उपग्रह (सैटेलाइट) आधारित संचार में किसी संचार उपग्रह के माध्यम से संदेश भेजने वाले और प्राप्त करने वाले के बीच संवाद होता है। भू–आधारित संचार, किसी भौगोलिक क्षेत्र जैसे– देश या राज्य में फैले ट्रांसमीटर के जाल द्वारा संप्रेषण का माध्यम है। भारत में बैंकिग क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए सूचना एवं प्रोद्योगिक तकनीकी का प्रयोग करते हैं।

यूनेस्कों के अनुसार सूचना प्रोद्योगिकी की परिभाषा :– सूचना प्रोद्योगिकी, '' वैज्ञानिक, प्रोद्योगिकीय और इंजीनियरिंग विषय हैं और सूचना की प्रोसेसिंग, उनके अनुपयोगो की प्रबन्ध तकनीके हैं। कम्प्यूटर और उनकी मानव तथा मशीन के साथ अंतः किया एवम् सम्बद्ध सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विषय है ।'' **संबधित साहित्य का पुनरावलोकन**

- **वेथीराजन सी, रामू सी (2019)** ''चेन्नई जिले में चुनिन्दा बैंकों के सामाजिक उत्तरदायित्व पर उपभोक्ताओं का ज्ञान'' पर अपने लेख से पता चलता है कि ग्राहकों को शासकीय बैंकों को कानूनी, नैतिक और आर्थिक जिम्मेदारी पर पर्याप्त ज्ञान है और यह सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय विशेषताओं द्वारा श्रेणीयों में ज्ञान विभिन्न अन्तर के कारण संगत नहीं है, यह वरीयता को भी प्रभावित कर सकता है। यह कि बैंक कें उपभोक्ताओं का ज्ञान है कि वे इस वजह से अधिक वरीयता देते हैं।
- **अरोडा (2020)** ने अपने शोधपत्र में बैकिंग क्षेत्र में तकनीकी प्रयोग को एक महत्वपूर्ण प्रकिया बताया। उन्होने नये बैकिंग उत्पादों व सेवाओं में तकनीक के प्रभाव को बताया। बैंको को वैकल्पिक रूप सें लाभ उठाने के लिए उन्हे अपनी क्षमता का विकास करना चाहिए।

शोध के उद्देश्य

- झालावाड़ जिले के शासकीय बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका को जानना।
- झालावाड़ जिले के शासकीय बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा लोगो को को मिल रहे लाभो की व्याख्या करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध–पत्र के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इसमें द्वितीयक आकडों का उपयोग किया गया हैं।

संमकों का संग्रहण

शोधपत्रों, पत्र–पत्रिकाओं एवम् प्रकाशनों के आधार पर किया गया हैं।

बैंक और प्रौद्योगिकी

21वी शताब्दी में जहॉ एक और हर क्षेत्र में तकनीक का दिन प्रतिदिन प्रयोग बढ़ा है। सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा अब हर कार्य सरल हो चुका हैं। बैकिंग क्षेत्र भी इससे अछूता नही रहा है ं। नई तकनीकों ने बैकिंग में जो बदलाव किए हैं। इन्होने अधिकारियों / कर्मचारियों व बैकिंग ग्राहकों को प्रभावित किया हैं। प्रौद्योगिकी के कारण ही बैकिंग उत्पादों और सेवाओं को पहले से अधिक आसानी से और प्रभावी ढ़ंग से समझा जा सकता हैं। अत्याधिक महत्वपूर्ण सूचनाओं का आसानी से वितरण से तथा उनकी आसानी से हर वर्ग तक पहुंच के कारण बैकिंग और आसान हो चकी हैं। भारत में बैकिंग का विकास 250 साल पहले पारंपरिक शुरूआत के साथ ही होने लग गया था। आज बैकिंग की सुविधा नई तकनीकों के आने से बह ुत ज्यादा बदल चुकी हैं। बैंको मे अब लम्बी–लम्बी कतारे नही लगती हैं। अब हर बैकिंग उपभोक्ता की जेब में मोबाईल के रूप में अपना – अपना बैंक हैं। नेट–बैकिंग के द्वारा वह घर बैठे रकम को ईधर–उधर कर सकता हैं। बैकिंग क्षेत्र में तकनीक के प्रयोग से हर आदमी आत्मनिर्भर हो गया हैं।

बैंकों में रूपयें निकालने के लिये लगने वाली लम्बी–लम्बी कतारों से छुटकारा दिलाने के लिए 1987 में निजी क्षेत्र के बैंक एच.एस.बी.सी. ने मुम्बई में पहला ए. टी.एम. लगाया था। विश्व में सबसे पहला ए.टी.एम 1969 में अमेरिका में खोला गया था। भारत मे पहला ए.टी.एम. आई.सी.आई.सी.आई. बैंक ने तथा पहला क्रेडिट कार्ड सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने दिया। इसके साथ ही ए.टी.एम., इन्टरनेट बैकिंग और क्रेडिट कार्ड के जरिये लोगो तक बैकिंग की पहुंच आसान हो गई। इससे पैसे का लेन–देन अत्याधिक सरल हो गया। सूचना प्रौद्योगिकी के आने से बैकिंग अब पेपरलेस हो गई हैं। इंस्टीट्युट फॉर डेवलपमेंट एंड रिसर्च इन बैकिंग टेक्नोलोजी की रिपोर्ट **" टेक्नोलोजी इन बैकिंग"** नाम से जारी रिपोर्ट में यह बात साबित हो जाती हैं।

• **इन्टरनेट बैकिंग–** इन्टरनेट बैकिंग सूचना प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण अंग हैं। इसके लिए मोबाईल या कम्प्यूटर पर इन्टरनेट के माध्यम से लेन–देन व सूचना का आदान–प्रदान होता है ं।

• **मोबाईल बैकिंग–** आजकल बैकिंग के कई एप मौजूद हैं, जो मोबाईल के जरिए मोबाईल बैकिंग को बढ़ावा दे रहे हैं। इनके माध्यम से हर किसी की जेब में बैंक पहुँच गया हैं।

• **टेलिफोन बैकिंग –** यह बैकिंग एक पुराना रूप हैं जो वर्तमान में कम प्रचलन में हैं।

• **एस.एम.एस. बैकिंग –** इसमें बैंक द्वारा स्कीम, नयी योजनाए, स्टेटमेन्ट, व अन्य सुविधाऍं सीधे मोबाईल पर मैसेज के द्वारा भेज दी जाती हैं।

• **क्रेडिट कार्ड** – क्रेडिट कार्ड का उपयोग ऑनलाईन शॉपिंग और POS टर्मिनल पर कर सकते हैं। क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने के लिऐ बैंक खाते में बैलेस होना चाहिए।

• **डेबिट कार्ड :–** डेबिट कार्ड से ए.टी.एम. से पैसे निकालने के साथ ऑनलाईन शॉपिंग भी कर सकते हैं। यह भी बैंक अकाउंट से लिंक होता हैं।

• **ए.टी.एम. –** ए.टी.एम. कार्ड का उपयोग हम ए.टी.एम. मशीन से पैसे निकालने के लिए एक चार अंको का पिन डालना पड़ता हैं। ए.टी.एम. को खाते से लिंक किया जाता हैं। यह एक सर्वश्रेष्ठ टेक्नोलोजी हैं।

निष्कर्ष

बैकिंग आज की आवश्यकता हैं। आज बैकिंग के बिना कोई भी कार्य संभव नही हैं। पिछले एक दशक में सूचना–प्रौद्योगिकी का जिस तरह से बैकिंग क्षेत्र मं उपयोग बढ़ा हैं, हम कह सकते हैं कि बैकिंग ने और अधिक प्रगति की हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के नित्य नए आयाम स्थापित होने से बैकिंग प्रक्रियाऍं और भी अधिक उन्नत हुई हैं। हम यह कह सकते हैं कि झालावाड़ जिले के शासकीय बैंकिंग क्षेत्र में भी भविष्य में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से बैकिंग क्षेत्र में नए प्रयोग होगें। बैंक आज की तरह भविष्य में भी इसकी आवश्यकता बनी रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Bank Quest
- www.wikipedia.in
- www.informationtechnologyinindia.com
- Hassan, G. (1998) Information Tech in the Banking Sector: Opportunities, Threats and Strategies. Graduate School of Business and Management, American University of Beirut, Beirut.
- Margaret Rouse (2005) ICT (Information and Communications Technology). http://searchcio.techtarget.com/definition/ICT-information-and-communications-technology-or-technologies
- RBI Report
- डॉ. सतीश तानाजी भौसले, डॉ. बी.एस. सावन्त "Technological Developments in Indian Banking Sector"